संख्या सती पुलकेन रीमाञ्चेन भेदे उन्नमे दत्ते सित श्रनाः प्रकीपस्थापगमात् विलीला विलीलवृद्धिः केवलविक्रमेण इठाङ्ग हणेनैव वशीक्षतीपभुकत्यर्थः॥ १४॥

भ॰ सामी नुषेतियादि। का चिन्ना निनी सामी नुषेत प्रसादनी यिते प्रियेणा कुरिता आकुरिता खोन नखक मेणा खृष्टा अथान नरं पुलकेन रीमा खोन भेदे उद्गमे दत्ते सित अनः प्रकीप खा प्रमात् विलीला चञ्चल बुद्धिः सासुरते साभिलाषा वा केवल विकासेण खठा द्व हणमा चेण वशी छता उपभुका भावं ज्ञाला प्रसाद नान्तरम छत्प्रसाद नान्तरम का प्रसाद नान्तरम छत्प्रसाद नान्तरम का प्रसाद नान्तरम का प्रस्ता नान्तरम का प्रस्ता नान्तरम का प्रसाद नान्तरम का प्रस्ता नान्तरम का प्रस्ता

गुरुईधाना परुषत्वमन्या कान्तापि कान्तेन्दुकरा भिस्छा। प्रह्लादिता चन्द्रशिचेव द्वर्णं चोभात्सवत्वे दज्ञना वभूव॥१५॥

जिंगा गुरुरित्यादि। अन्यापि काचित् स्ती कान्ता कमनीयहणा
गुरुः धीरा वातागुणवचनादिति वा छीए न भवति दधाना
पर्वतं नैष्ठ्यं कान्तेन भर्चा दन्दुनेव कराभिस्ष्ट्या सती प्रह्वा
दिता सुखिता छीभात् चेतसीविकारात् द्वर्णं स्वत्स्वेदजला
वस्रव चन्द्रशिलेव चन्द्रमणिरिव सा गरीयसी कान्ता पर्वतं
काठिन्यं दधाना दन्दुना कराभिस्ष्ट्या प्रह्वादिता सुखितेव
छीभात्स्वप्रकृतिविकारात् स्वक्षणा भवति॥१५॥